अध्याय 2

अ. संगीत ग्रन्थों का अध्ययन
ब. रागों का समय सिद्धान्त

अ. भरत कृत नाट्य शास्त्र

नाट्य शास्त्र भारतीय संगीत का आदि और प्रथम उपलब्ध ग्रन्थ है। जिसमें संगीत के आधारभूत तत्त्वों पर प्रकाश डाला गया है। भरत के समय के विषय में बहुत मतभेद है। अधिकांश विद्वान ई. पू. 200 से 400 ई. तक के मध्य भरत का समय मानते हैं।

स्वयं नाम से स्पष्ट है कि यह ग्रन्थ नाट्य पर लिखा गया है। किन्तु इसके अन्तिम छः अध्यायों में अड्ताईस से तैंतीस तक भरत ने संगीत शास्त्र का विवेचन ने किया है।

नाट्य – शास्त्र के छः अध्याय संगीत से सीधा सम्बन्ध रखते हैं 'अड्ताइसवें' अध्याय में वाद्यों के प्रकार, श्रुति, ग्राम, मूर्च्छना, जाति भेद तथा उनके लक्षण आदि पर प्रकाश डाला है।

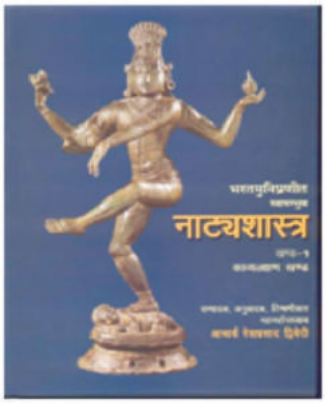

उन्तीसवें अध्याय में विभिन्न प्रकार की वीणा, उनकी वादन–विधि, जातियों का रसानुकूल प्रयोग का विवरण है तीसवें अध्याय में सुषिर वाद्यों का विवरण हैं। इकतीसवें अध्याय में कला, लय और विभिन्न तालों का विवरण दिया गया है। बत्तीसवें अध्याय में गायक–वादक के गुण, ध्रुव के पांच भेद और तैंतीसवें में अवनद्ध वाद्यों की उत्पत्ति, भेद, वादन–विधि का वर्णन किया गया है।

इसमें वादन की अठारह जातियाँ और वादकों के लक्षणों का वर्णन है। इस प्रकार इन छः अध्यायों में 28 और 29 अध्याय बड़े महत्त्वपूर्ण हैं किन्तु इसके अतिरिक्त नाट्य शास्त्र का छठा और सातवाँ अध्याय भी संगीत के लिये बड़ा महत्त्वपूर्ण है। छठे अध्याय में रस का लक्षण और व्याख्या, भाव लक्षण और व्याख्या, आठों रसों का वर्णन, रस के देवता और वर्ण तथा सातवें में भाव, अनुभाव, आदि की व्याख्या 'स्थाई', व्यभिचारी और सात्विक भावों का विवरण दिया गया है। साथ ही 19 वें अध्याय में स्वरों का रसों में विनियोग, तीन स्थान काकु, अलंकार आदि का वर्णन है।

भरत को संगीत का अच्छा ज्ञान था और अपने कानों पर बड़ा विश्वास था। भरत द्वारा बताई गई अधिकांश बातें आज भी अक्षरशः सत्य मानी जाती है। भरत ने एक सप्तक के अन्तर्गत बाईस श्रुतियाँ और सात शुद्ध स्वर और दो विकृत स्वर माने हैं प्रत्येक स्वर को अन्तिम श्रुति पर स्थापित किया है। इस प्रकार यह ग्रन्थ संगीत का आधार ग्रन्थ सिद्ध होता है।

शारंग देव कृत संगीत रत्नाकर

शारंगदेव त 'संगीत रत्नाकर' संगीत का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। जिसका समय 13 वीं शताब्दी के मध्य का है।

'संगीत रत्नाकर' 'मध्यकालीन संगीत का सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। प्राचीन संगीत में जो स्थान 'नाट्य शास्त्र' का है वही मध्यकालीन संगीत में 'संगीत रत्नाकर' का है।

उत्तर भारत और दक्षिण भारत के लोग रत्नाकर को अपने संगीत का आधार ग्रन्थ मानते हैं। दोनों ही संगीत पद्धतियों में इस ग्रन्थ को सम्मान दिया जाता है।

संगीत रत्नाकर सात अध्यायों में विभाजित है जिनमें गायन, वादन और नृत्त्य तीनों से सम्बन्धित पारिभाषिक शब्दों तथा अन्य बातों पर प्रकाश डाला गया है।

संगीत रत्नाकर के प्रथम अध्याय में नाद की परिभाषा, नादोत्पत्ति और उसके भेद, सारणा चतुष्टयी, ग्राम, मूर्च्छना, तान निरूपण, स्वर और जाति–साधारण, वर्ण–अलंकार तथा जातियों का विस्तृत वर्णन मिलता है।द्वितीय अध्याय में ग्राम राग व उसके विभाग तथा रागांग, भाषांग शब्दों का स्पष्टीकरण और देशी राग व उनके नाम आदि दिए गए हैं। तृतीय अध्याय में वाग्गेयकार के लक्षण गीत के गुण–दोष, गायक के गुण–दोष और स्थायी इत्यादि का विवरण प्राप्त होता है।चतुर्थ अध्याय में गान के निबद्ध और अनिबद्ध भेद, धातु व प्रबन्ध के भेद तथा अंगों इत्यादि का विवरण प्राप्त होता है।पंचम अध्याय में ताल विषय जिसमें उस समय के प्रचलित तालों पर विचार किया गया हैं। छठा अध्याय वाद्याध्याय है। इस अध्याय में उन्होंने समस्त वाद्यों को चार भागों में बाँटा है। तत्, सुषिर, अवनद्ध और घन वाद्यों और वादकों के गुण–दोष दिए गए हैं।सप्तम अध्याय नृत्त्य, नाट्य और नृत्त पर है। इसमें नर्त्तन सम्बन्धी प्रत्येक बात को स्पष्ट किया गया है।

इस ग्रन्थ में 264 रागों का वर्णन दिया गया है। शारंगदेव ने सात शुद्ध और बारह वित स्वर कुल 19 स्वर माने है।

इस प्रकार यद्यपि शारंगदेव ने श्रुति, स्वर, ग्राम जाति आदि के वर्णन में भरत का ही अनुसरण किया है, फिर भी उनकी पद्धति में प्रगति और विकास के लक्षणों का अभाव नहीं है। मूर्च्छनाओं की मध्य सप्तक में स्थापना वित स्वरों की कल्पना, मध्यम ग्राम का लोप और प्रति मध्यम की उत्पत्ति इत्यादि विषय 'संगीत रत्नाकर' की मौलिकता प्रकट करते है।

भातखंडे कृत – श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम्

1909–1910 से भारतखंडे के ग्रन्थों को सृजन आरम्भ होता है। उन्होंने सर्व प्रथम 'श्री मल्लक्ष्यसंगीतम्' नामक ग्रन्थ संस्कृत भाषा में लिखा। जो उन्होंने चतुर पंडित उपनाम से लिखा है। इस संगीत की पुस्तक में रागों का वर्णन सप्तक के शुद्ध और विकृत 12 स्वरों के आधार पर किया गया है। यह ग्रंथ संस्कृत भाषा में लिखा गया है। इस ग्रंथ की रचना तिथि सोमवार, चैत्रशुक्ल प्रतिपदा शक् 1831 तदनुसार मार्च 22 ईस्वी सन् 1909 है।

इस ग्रंथ का उद्धेश्य वह मार्ग प्रशस्त करना है जिसके द्धारा 'लक्ष्य संगीत' अर्थात् प्रचलित संगीत का ज्ञान सुगमता से हो सकें। ग्रंथकर्त्ता के अनुसार संगीत के शास्त्र पक्ष तथा क्रियात्मक पक्ष दोनों का ही समन्वय करने वाली आधुनिक युगीन शिक्षा प्रणाली के लिये योग्य अध्यापकों का निर्माण एवं उनकी अपेक्षाओं की पूर्ति करना इस ग्रंथ का ध्येय है।

'श्रीमलमक्ष्य संगीतम्' में दो अध्याय है, पहला 'स्वराध्याय' तथा दूसरा 'रागाध्याय'। 'स्वराध्याय' में श्रुति, स्वर, ग्राम, मूर्च्छना, मेल, राग, वर्ण, अलंकार, तान आदि विषयों का निरूपण शास्त्रीय परम्परा के अनुसार एवं महत्वपूर्ण संगीत ग्रंथों से प्रमाण देते हुए किया है। इस ग्रंथ में संगीत रत्नाकर आदि प्राचीन ग्रंथो और ग्रंथकारों पर आलोचनात्मक टिप्पणियां भी की गई है।

'रागाध्याय' में जन्य एवं जनक राग वर्गीकरण के अनुसार उत्तर भारतीय संगीत में प्रचलित मेलों एवं उनसे जन्य रागों का वर्णन मिलता है। रागों का वर्णन यद्यपि संक्षेप में है परन्तु राग के बारें में जानने योग्य सभी महत्वपूर्ण बातों का समावेश है। रागों के विवरण के अतिरिक्त कुछ अन्य विषयों –जैसे गायक के गुणदोष, वाग्गेयकार के लक्षण, सुशरीर लक्षण आदि पर संगीत रत्नाकर के अंश भी उद्धत किये गये है।

अंत में परिशिष्ट में विभिन्न संगीत ग्रंथों में प्रतिपादित रागों एवं राग वर्गीकरण की तालिकाऐं दी गई है। इस ग्रंथ में कहीं भी प्रचलित प्रबंध शैलियों तथा ताल पद्धति का उल्लेख नहीं मिलता है।

यह ग्रंथ भातखंडे जी के सांगीतिक शोध एवं मान्यता का सार है। इसमें जो–जो बाते संकेत के तौर पर कहीं गई है, उनका विस्तार भातखंडे के अन्य ग्रंथो में हुआ है। इस प्रकार यह ग्रंथ उत्तर भारतीय संगीत पद्धति का अत्यन्त महत्वपूर्ण संदर्भ ग्रंथ अथवा Practical Hand Book सिद्ध हुआ है।

ब. रागों का समय सिद्धान्त

भारतीय संगीत की यह प्रमुख विशेषता है कि प्रत्येक राग के गाने–बजाने का एक निश्चित समय माना गया है शास्त्रकारों ने अपने अनुभव तथा मनोवैज्ञानिक आधार पर विभिन्न रागों के पृथक–पृथक समय निश्चित किये है। इस प्रकार प्रत्येक राग को दिन और रात के विशेष समय पर गाना या बजाना चाहिए इसी को रागों का समय सिद्धान्त कहते हैं। उत्तरी हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में रागों के गायन–वादन का समय दिन और रात्रि के चौबीस घंटों के दो भाग करके बाँटा गया है।

(1) पहला भाग बारह बजे दिन से बारह बजे रात्रि तक माना जाता है। पहले भाग को पूर्व भाग कहते हैं।

(2) दूसरा भाग बारह बजे रात्रि से बारह बजे दिन तक माना जाता है। दूसरे को उत्तर भाग कहते हैं।

स्वर और समय के अनुसार उत्तर भारतीय रागों के तीन वर्ग मानकर कोमल तीव्र स्वरों के हिसाब से उनका विभाजन किया गया हैं।

(1) रेध कोमल वाले अथवा सन्धि प्रकाश राग

(2) शुद्ध रे और शुद्ध ध वाले राग

(3) कोमल ग और कोमल नि वाले राग

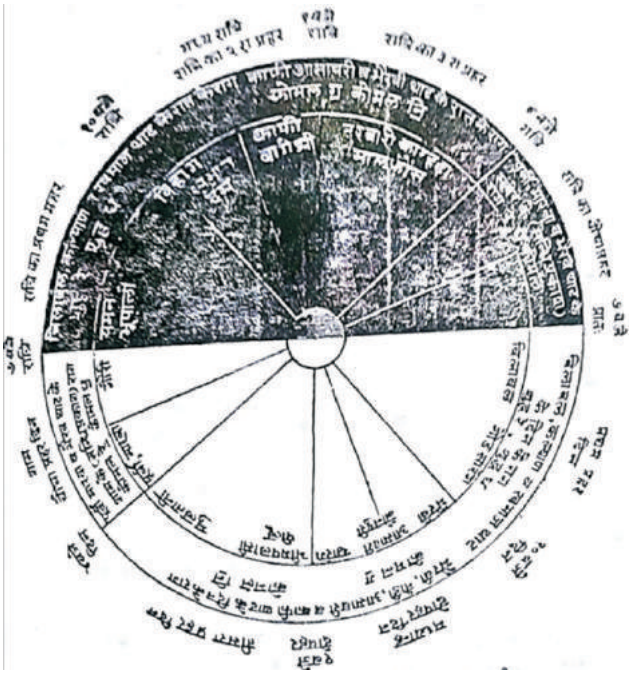

इस वर्गीकरण में पहले वर्ग के रागों को अर्थात् कोमलरे ध स्वर वाले रागों को सन्धि प्रकाश राग भी कहते हैं। किन्तु दूसरे और तीसरे वर्ग के रागों का कोई दूसरा नाम नहीं है।

सन्धि प्रकाश का अर्थ है प्रकाश का मेल। सन्धि प्रकाश उस समय को कहते हैं जब दिन और रात का मेल होता है। सन्धि प्रकाश समय 24 घन्टे में दो बार आता है एक सूर्यास्त के समय दूसरा सूर्योदय के समय। ऐसे ही समय पर गाये जाने वाले रागों को सन्धि प्रकाश राग कहते हैं। सन्धि प्रकाश समय सूर्यास्त और सूर्योदय के थोड़ी देर पहले शुरू होता है और सूर्योदय और सूर्यास्त के थोड़ी देर बाद तक रहता है।

हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में रागों के गायन समय सिद्धान्त में मध्यम एक महत्त्वपूर्ण स्वर है मध्यम स्वर दिन और रात के रागों का सूचक है। जिन रागों में तीव्र मध्यम का प्रयोग होता है वे अधिकतर सन्ध्या समय और रात्रि में गाये बजाये जाते है अर्थात् चार बजे शाम से चार बजे सुबह तक गाये–जाने वाले अधिकांश राग में (ग और नि कोमल स्वर वाले रागों को छोड़कर) तीव्र मध्यम का प्रयोग होता है। इसी प्रकार जिन रागों में शुद्ध मध्यम का प्रयोग होता है वे अधिकतर प्रातःकाल और दिन में गाये बजाये जाते हैं। अर्थात् चार बजे सुबह से चार बजे शाम तक गाये जाने वाले रागों में शुद्ध मध्यम का प्रयोग होता है। (सुबह के कुछ सन्धि प्रकाश रागों को जैसे सोहनी, बसंत, रामकली आदि छोड़कर तथा दिन के कुछ रागों को जैसे हिन्दोल, तोड़ी मुल्तानी आदि को छोड़कर)सन्धि प्रकाश रागों में भी मध्यम स्वर का बहुत महत्त्व है – प्रातः कालीन सन्धि प्रकाश रागों में अधिकतर मध्यम स्वर, कोमल यानी शुद्ध होगा जैसे – भैरव कालिंगड़ा और सांय कालीन संधि प्रकाश रागों में अधिकतर तीव्र मध्यम होगा। जैसे पूर्वी मारवा राग। इनमें तीव्र मध्यम है।उपर्युक्त वर्गीकरण के अनुसार तीनों श्रेणी के रागों की कुछ विशेष पहचान है प्रथम रे और ध कोमल स्वर वाले रागों अर्थात् संधि प्रकाश रागों की पहचान यह है कि उनमें रे अवश्य कोमल होता है ध चाहे कोमल हो या तीव्र और ग तथा नि तीव्र होते हैं।दूसरे रे और ध तीव्र वाले रागों की पहचान यह है कि उनमें रे ग और ध अवश्य तीव्र होते है नि चाहे कोमल हो या तीव्र। तीसरे ग और नि कोमल स्वर वाले रागों की पहचान यह है कि उनमें ग अवश्य कोमल होता है और रे तथा ध चाहे कोमल हो या तीव्र।

समय सिद्धान्त के अनुसार तीनों श्रेणी के राग 24 घन्टे में दो बार गाये बजाये जाते हैं –रे ध तीव्र स्वर वाले राग हमेशा सन्धि प्रकाश रागों के गाने के बाद गाये बजाये जाते हैं। इसमें कल्याण बिलावल और रवमाज थाट के राग गाये बजाये जाते हैं।ग और नि कोमल स्वर वाले राग हमेशा रे और ध शुद्ध स्वर वाले रागों के गाने के बाद गाये बजाये जाते हैं।इसमें बागेश्वरी, जय जयवंती, मालकोस इत्यादि राग होते हैं।

मुख्य बिन्दु –

- भारतीय संगीत शास्त्र के अध्ययन के लिये जो कुछ सामग्री आज उपलब्ध है, उसका प्रथम ग्रन्थ 'नाट्यशास्त्र है, क्योंकि इससे पूर्व संगीत शास्त्र पर रचित कोई ग्रन्थ प्राप्त नहीं होता है।
- पं. शारंगदेव द्वारा रचित 'संगीत रत्नाकर' को भारतीय संगीत का आधार ग्रन्थ माना जाता है। इसको सप्त अध्यायी भी कहा जाता है।
- मनोवैज्ञानिक आधार पर शास्त्रकारों द्वारा राग गायन का समय निर्धारण किया गया है। जिस प्रकार रंग देखने से हमारे मनोभावों में परिवर्तन होता है जैसे लाल रंग उत्तेजना, गर्मी व नीला रंग शान्ति, ठंडक का आभास देता है वैसे ही स्वर भी भाव के अनुकुल प्रभाव पैदा करते है। समय तथा रितुओं के अनुकुल स्वर कई रागों का सृजन करते हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

(1) संगीत रत्नाकार के लेखक कौन हैं?

(अ) भरत (ब) औंकारनाथ

(स) मंतग (द) शारंगदेव

(2) महर्षि भरत ने कुल कितने स्वर माने थे–

(अ) दस (ब) आठ

(स) नौ (द) सात

(3) 'चतुर पण्डित' उपनाम, किसके लिये प्रयुक्त होता है–

(अ) अहोबल (ब) भरत

(स) विष्णुनारायण भातखण्डे (द) विष्णु दिगम्बर पलुस्कर

(4) निम्नलिखित में से कौनसा सन्धि प्रकाश राग है–

(अ) भैरव (ब) बिहाग

(स) खमाज (द) भूपाली

(5) संगीत शास्त्र पर रचित सामग्री सर्व प्रथम कौन से ग्रन्थ से प्राप्त हुई?

(अ) नाट्यशास्त्र (ब) संगीत रत्नाकर

(स) भातखण्डे जी (द) संगीत विशारद

उत्तरमाला– (1) द (2) स (3) स (4) अ (5) अ

लघुउत्तर प्रश्न –

(1) नाट्यशास्त्र के रचियता कौन है? लिखिये।

(2) समय सिद्धान्त के अनुसार रेध कोमल स्वर वाले रागों को क्या कहते हैं?

(3) हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में रागों के गायन समय के अनुसार कितने वर्गीकरण किये गये हैं?

(4) 'श्री मल्लक्ष्यसंगीतम्' के लेखक कौन हैं?

(5) 'सप्ताध्याई' किस ग्रन्थ को कहते हैं?

निबन्धात्मक प्रश्न –

(1) रागों के समय सिद्धान्त का वर्णन कीजिये। रागों को निश्चित समय पर गाना क्यों महत्त्वपूर्ण है?

(2) हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में रागों के गायन समय के अनुसार कितने वर्गीकरण किये गये हैं।समझाईये।

(3) नाट्य शास्त्र के कितने और कौन से अध्याय संगीत से सम्बन्धित हैं?

(4) 'संगीत रत्नाकर' ग्रन्थ पर अपने विचार व्यक्त करिये।

(5) भातखण्डे जी द्वारा रचित 'श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम्' ग्रन्थ के बारे में विस्तार से लिखिये।

नाट्य शास्त्र के पश्चात उपलब्ध प्रमुख संगीत ग्रन्थ

संगीत ग्रन्थ	लेखक	रचना काल
बृहद्देशी	मतंग	6 ठी सदी
नारदीय शिक्षा	नारद	7 वीं सदी
संगीत मकरंद	नारद	8 वीं सदी
गीत गोविंद	जयदेव	12 वीं सदी
संगीत रत्नाकर	शारंगदेव	13 वीं सदी
संगीत सार	विद्यारण्य	14 वीं सदी
राग तरंगिणी	लोचन	15 वीं सदी
स्वरमेलकलानिधि	रामामात्य	16 वीं सदी
संगीत पारिजात	अहोबल	17 वीं सदी
संगीत दर्पण	दामोदर	17 वीं सदी
चतुर्दण्डिप्रकाशिका	व्यंकटमखी	17 वीं सदी